इकाई 12 महाभारत का दक्षिण पूर्व एशिया में प्रचलन

इकाई की रूपरेखा

12.0 उद्देश्य

12.1 प्रस्तावना

12.2 महाभारत एक परिचय

12.3 महाभारत का दक्षिण पूर्व एशिया में प्रचलन

12.3.1 कम्बोज में महाभारत

12.3.2 चम्पा में महाभारत

12.3.3 इण्डोनेशिया में महाभारत

12.3.3.1 इण्डोनेशिया में महाभारत के पर्वों के तीन सूचियाँ

12.3.4 इण्डोनेशिया में पाये जाने वाले महाभारत के पर्वों का संक्षिप्त वर्णन

12.4 सारांश

12.5 शब्दावली

12.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

12.7 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

12.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप–

- महाभारत की विषयवस्तु से परिचित हो पायेंगे।
- महाभारत दक्षिण पूर्व एशिया में प्रचलन विशेष रूप से कम्बोज, चम्पा (वियतनाम),
- इण्डोनेशिया में प्राप्त हुए महाभारत का ज्ञान प्राप्त हो सकेगा।
- इण्डोनेशिया में प्राप्त होने वाले महाभारत के पर्वों की तीन सूचियाँ–प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय सूची तथा उसमें पाये जाने वाले महाभारत के पर्वों विशेषकर कवि आदि पर्व, उद्योग पर्व, कवि भीष्मपर्व, कवि आश्रम पर्व, कवि प्रस्थानिक पर्व कवि स्वर्ग्यारोहण पर्व एवं के बारे में ज्ञान प्राप्त हो पायेगा।

12.1 प्रस्तावना

विश्व साहित्य में सबसे बड़ा ग्रन्थ महाभारत ही है जिसमें एक लाख से कुछ अधिक श्लोक हैं। यह भारत के सांस्कृतिक विषयों का विराट् कोश तथा आचार की संहिता है। महाभारत का जो बृहत् संस्करण विकसित हुआ है उसके सम्पादक या लेखक ने अपने युग के समस्त उल्लेखनीय विषयों को इसमें समाविष्ट करने का अप्रतिम प्रयास किया है। इसीलिए यह लोकोक्ति चल पड़ी–**'यन्न भारते तन्न भारते'** अर्थात् जो बातें महाभारत में नहीं हैं वे भारतवर्ष में नहीं है। इस प्रकार महाभारत का कम्बोज, चम्पा एवं इण्डोनेशिया में अनुवाद प्रकाशित हुए है। सर्वप्रथम **'दक्षिणपूर्व–एशिया'** के देशों कम्बुज एवं चम्पा के संस्कृत अभिलेखों में स्थान–स्थान पर महाभारत के पात्रों, कथाओ और उपकथाओं के अनेक उल्लेख प्राप्त होते हैं। तद्देशीय भाषा में महाभारत के किसी भी पर्व का अनुवाद तथा उस पर रचित कथा ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है। भारत वर्णन के

बाहर महाभारत केवल द्वीपान्तर में साहित्य रूप में निबद्ध हुआ।

इकाई–12 '**महाभारत का दक्षिण पूर्व एशिया में प्रचलन**' खण्ड–3 के अन्तर्गत आता है। द्वीपान्तर का प्राचीन साहित्य आदिकाव्य रामायण, महाभारत, मनुस्मृति, शैव और बौद्ध दर्शन से अनुप्राणित एवं ओतप्रोत है। यह **'कविसाहित्य'** कहलाता है। इस साहित्य की रचनाएँ सरस, रोचक और काव्यमय है। जब हम तिब्बत और चीन में भारतीय धर्म और साहित्य का अन्वेषण करते हैं तो वहाँ भारतीय ग्रन्थों का अनुवाद करने की परम्परा को प्राप्त करते हैं। अनुवाद में भाषा और भाव की मुक्ति तथा स्पष्टता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। ये अनुदित साहित्यिक ग्रन्थ और उन पर तद्देशीय आचार्यों द्वारा प्रणीत टीकाएँ ओर उपटीकाएँ बृहद संग्रह के रूप में सुरक्षित है। ये केवल धर्म, कला, पूजा और दर्शन ही नहीं आयुर्वेद जैसे जनजीवनोपयोगी विषयों पर अनेकानेक ग्रन्थ इन संग्रहों में संकलित है। इसके विपरीत द्वीपान्तर में शब्दानुवाद करने की परम्परा कभी नहीं रही । वहाँ के कवि, पण्डितों और भिक्षुओं में सस्कृत–साहित्य का प्रचार था। वहाँ संस्कृत के अध्ययन अध्यापनार्थ अनेक ग्रंथों का प्रणयन हुआ। पर्वसाहित्य की कथा–क्रम एवं उसमें प्रयुक्त संस्कृत श्लोकों, श्लोकांशों के आधार पर हम कह सकते हैं कि **'कवि'** लेखकों में संस्कृत महाभारत के अध्ययन एवं पाठन की परम्परा थी। अतः इस इकाई में महाभारत की विषयवस्तु, तथा महाभारत का दक्षिण पूर्व एशिया में प्रचलन विशेष रूप से कम्बोज, चम्पा (वियतनाम), इण्डोनेशिया में प्राप्त हुए महाभारतीय ज्ञान प्राप्त हो सकेगा। इण्डोनेशिया में प्राप्त होने वाले महाभारत के पर्वों की तीन सूचिया–प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय सूची तथा उसमें पाये जाने वाले महाभारत के पर्वो विशेषकर कवि आदि पर्व, उद्योग पर्व, कवि भीष्मपर्व, कवि आश्रम पर्व, कवि प्रस्थानिक पर्व, कवि स्वर्ग्यारोहण पर्व के बारे में ज्ञान को स्पष्ट किया जायेगा।

12.2 महाभारत एक परिचय

रामायण के अतिरिक्त महर्षि वेदव्यास रचित एक लाख श्लोकों को महाभारत भी कवियों तथा साहित्यकारों के लिए कथानक ग्रहण करने का आधार ग्रन्थ रहा है। दोनों के बीच ऐसे युद्ध का वर्णन है जहाँ अन्याय पर न्याय की विजय दिखाई गई है–'**यतो धर्मस्ततो जयः।**' इसमें 18 पर्व है जिनके नाम मुख्य विषय वस्तु के आधार पर दिये गये है। महाभारत में जिनके नाम मुख्य विषय वस्तु के आधार पर दिये गये है। महाभारत में भारतीय जीवन पद्धति के सभी पक्षों पर व्यापक प्रकाश डाला गया है। कहा गया है कि जो इसमें वर्णित है वही सर्वत्र साहित्य में पल्लवित है किन्तु जो उसमें प्रतिपादित नहीं वह अन्यत्र कहीं नहीं है–'**यदिहास्ति तदन्यत्र न तत् क्वचित्।**' इसके अतिरिक्त एक सामान्य लोकोक्ति भी प्रचलित है–**यत्र भारते तन्न भारते**' अर्थात् जो महाभारत में नहीं है, वह भारत में भी नहीं है। इस प्रकार भारतीय लौकिक साहित्य में रामायण के पश्चात् महाभारत का ही स्थान है। यह अनेक दृष्टियों से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यह भारतीय साहित्य का आकर (कोष) ग्रन्थ है, जिसमें तत्कालीन सभी सांस्कृतिक, साहित्यिक आदि विषयों का समन्वय है। महाभारत के बृहत् संस्करण में लेखक की महत्त्वाकांक्षा रही है कि उस समय का उल्लेखनीय कोई भी विषय छूट न जाए। इस महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति के कारण ही यह 'भारत' से 'महाभारत' हो गया। महाभारत में स्वयं इस तथ्य का उल्लेख है–

धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ।
यदिहास्ति तदन्यत्र, यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्।।

महाभारत के लेखक का नाम व्यास कृष्णद्वैपायन, वेदव्यास है। वे पाराशर ऋषि के पुत्र थे। उनकी माता सत्यवती थी जिनका पालन यमुना के द्वीप में मल्लाहों के राजा दासराज के द्वारा हुआ था। वे वस्तुतः चेदिराज वसु की कन्या थी। वेदव्यास को यमुनाद्वीप में जन्म के कारण 'द्वैपायन', शरीर से कृष्णवर्ण होने के कारण 'कृष्णमुनि' तथा वैदिक मन्त्रों को याज्ञिक उपयोग के अनुसार धृतराष्ट्र, पाण्डु और विदुर इन्हीं से नियोग द्वारा उत्पन्न हुए थे। व्यास ने तीन वर्षों तक निरन्तर परिश्रम से महाभारत जैसे महान् ग्रन्थ की रचना की थी। वर्तमान महाभारत एक लाख से अधिक श्लोकों का ग्रन्थ है। इसलिए इसे 'शत–साहस्री संहिता' भी कहते हैं। इसे अठ्ठारह पर्वों में विभक्त किया गया है जो पुनः अनेक उपपर्वो तथा अध्यायों में विभक्त हैं। मुख्य रूप से कौरवों और पाण्डवों के बीच हुए उस युद्ध का इसमें वर्णन है जिसमें कौरवों का सर्वनाश हुआ तथा अन्याय पर न्याय की विजय हुई। इस युद्ध में कौरवों के विरुद्ध पाण्डवों की ओर से सहायता करने वाले कृष्ण की प्रमुख भूमिका थी। इसके 18 पर्व है जिनका मुख्य कथानक इस प्रकार है–

1. **आदिपर्व**–चन्द्रवंश का इतिहास और कौरवों एवं पाण्डवों की उत्पत्ति।
2. **सभापर्व**–द्यूतक्रीड़ा।
3. **वनपर्व**–पाण्डवों का वनवास।
4. **विराटपर्व** –पाण्डवों का अज्ञातवास।
5. **उद्योगपर्व**–श्रीकृष्ण द्वारा सन्धि का प्रयत्न।
6. **भीष्मपर्व**–अर्जुन को गीता का उपदेश, युद्ध का प्रारम्भ, भीष्म का आहत होकर शरशय्या पर पड़ना।
7. **द्रोणपर्व**–अभिमन्यु और द्रोण का वध।
8. **कर्णपर्व**–कर्ण का युद्ध और वध।
9. **शल्यपर्व**–शल्य का युद्ध और वध।
10. **सौप्तिक पर्व**–सोते हुए पाण्डवों के पुत्रों का अश्वत्थामा द्वारा वध।
11. **स्त्री पर्व**–शोकाकुल स्त्रियों का विलाप।
12. **शान्ति पर्व**–युधिष्ठिर के राजधर्म और मोक्ष सम्बन्धी सैकड़ों प्रश्नों का भीष्म द्वारा उत्तर।
13. **अनुशासन पर्व**–धर्म और नीति की कथाएँ, भीष्म का स्वर्गारोहण।
14. **आश्वमेधिक पर्व**–युधिष्ठिर का अश्वमेध अनुष्ठान।
15. **आश्रमवासिक पर्व**–धृतराष्ट्र आदि का वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश।
16. **मौसलपर्व**–यादवों का पारस्परिक संघर्ष से नाश।
17. **महाप्रस्थानिक पर्व**–पाण्डवों की हिमालय यात्रा।
18. **स्वर्गारोहणपर्व**– पाण्डवों का स्वर्गारोहण। इनके परिशिष्ट के रूप में 'हरिवंश पर्व' है जिसमें भगवान कृष्ण का जीवन चरित्र वर्णित है। इस पर्व को मिलाकर ही श्लोक संख्या एक लाख होती है। इन पर्वों में शान्ति पर्व बहुत बड़ा (चौदह सहस्र श्लोक) दूसरी ओर महा प्रस्थानिक पर्व सबसे छोटा (115 श्लोक) है।

12.3 महाभारत का दक्षिण पूर्व एशिया में प्रचलन

दीपान्तर के साहित्य में रामायण एवं महाभारत पर आधृत विशाल वाङ्मय उपलब्ध है। ये बृहद् काव्य बाली और जावाद्वीपवासियों के जीवन का आदर्श एवं मनोरंजन का उत्कृष्ट साधन रहे हैं। **दीपान्तर में आदि, विराट, उद्योग, भीष्म, आश्रमवासिक, मौसल, प्रस्थानिक और स्वर्गारोहण प्राप्त हुए है।** उत्तरपूर्व तथा दक्षिण पूर्व एशिया के देशों के साथ भारत के संस्कृतिक सम्बन्ध लिपि, भाषा, साहित्य, धर्म, दर्शन, राजनीति और कथा सभी महत्त्वपूर्ण स्तरों पर रहा है। इन देशों के धार्मिक और साहित्यिक विकास में भारत के प्रभूत योगदान के कारण इस क्षेत्र को विद्वानों ने बीसवीं सदी के प्रारम्भ में बृहद भारत का नाम दिया। इस प्रकार महाभारत एक कथा मात्र न होकर विश्वकोष की भाँति बृहद महाकाव्य है। इसने केवल हमारे देश के साहित्य को ही नहीं कम्बुज और चम्पा के विद्वत जगत को और इण्डोनेशिया के साहित्य को विशेष रूप से प्रभावित किया है। कम्बोज और चम्पा में उपलब्ध तीसरी शती से चौदहवीं शती के संस्कृत अभिलेखों के लेखक महाभारत की कथा से भलीभाँति परिचित है। क्योंकि यहाँ के संस्कृत अभिलेखों में स्थान–स्थान पर महाभारत के पात्रों, कथाओं और उपकथाओं के अनेक उल्लेख प्राप्त होते हैं पर तद्देशीय भाषा में महाभारत के किसी भी पर्व का अनुवाद अथवा उस पर कथित कथा–ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है। भारतवर्ष के बाहर महाभारत केवल द्वीपान्तर में साहित्य रूप में निबद्ध हुआ। यद्यपि महाभारत सम्बन्धी सर्वप्राचीन उल्लेख कम्बोज में मिलता है। महाभारत के लेखक के लिए आदरभाव अभिलेखों में यत्र–तत्र शक्ति है। धर्म्मानुरक्तोयश श्री राजेन्द्र वर्मा ने धर्मार्थकाम से यशोधर पुत्री को उसी प्रकार आप्लावित किया था।

12.3.1 कम्बोज में महाभारत

कम्बुज में संस्कृत महाभारत ग्रन्थ का अस्तित्व छठीं शताब्दी में अभिलेख द्वारा प्रमाणित है। किन्तु इनकी भाषाओं में इसके किसी भी पर्व का अनुवाद अथवा उस पर स्वतन्त्र रूप से लिखा गया कथा–ग्रन्थ नहीं मिलता है। महाभारत सम्बन्धी सर्वप्राचीन उल्लेख कम्बुज के शिलालेखों में मिलता है। ये शिलालेख सुन्दर काव्यमयी संस्कृत में है। कम्बुज देश के भारत से सम्बन्ध प्रथम शती से ही प्रारम्भ हो जाते हैं। पाँचवी

शताब्दी से सुन्दर काव्यमयी संस्कृत में लिखे अभिलेख मिलने लगते हैं। वेद, उपवेद, वेदांगों में निष्णात् श्रुतियों में प्रवीण द्विज बहुत बड़ी संख्या में थे–

विप्रैर्य्य ख्यातवीर्येरतिपटुरूचिभिर्ध्वस्तपापान्ध कारैर्व्वेदान्तज्ञानसारैस
स्मृतिपथनिरतैर्व्वीतरागलब्धैः।
धम्मर्थैष्टांगयोगप्रकटितकरणैरर्क्कमार्गानुयातैः र्न्नित्यन् ध्यानामृतार्द्रेरसकृदभिनुतो
वेदवेदांगविभ्दिः।।

पाँचवी शताब्दी के संस्कृत शिलालेखों में 18 श्लोकों में पुण्य कुरुक्षेत्र तीर्थ का वर्णन है। इसमें स्नान करने का पुण्य एक सहस्र अश्वमेध, सौ वाजपेय, एक लाख गायों के दान के बराबर है। इसके अनुसार कम्बुज–राज श्रीभववर्मा प्रथम की स्वसा जिन्हें दूसरी अरून्धती कहा गया है। इनके पति सोमविद श्री सोमशर्मा ने सूर्य युक्त त्रिभुवनेश्वर की प्रतिष्ठा कर महती पूजा की उन्होंने मन्दिर को रामायण, पुराण और महाभारत भेंट किये तथा उनके प्रतिदिन अखण्ड पाठ की व्यवस्था की –

रामायण पुराणाभ्यामशेषं भारतन् ददत्। अकृतान्वहतच्छेद्यां स च तद्वा चनास्थितिम्।।

राहु प्रमुख असुरों को जीतकर विष्णु द्वारा देवों और अमृत की रक्षा करने की कथा कम्बुज में मिलता है। **'प्रासात प्रः थाट'** के भग्नावशेषों से प्राप्त शिलालेखों में महाभारत के आदिपर्व के सम्भवाध्याय पुस्तक के दान का उल्लेख है। इस प्रकार ज्ञात होता है कि कम्बुज में महाभारत का अध्ययन अध्यापन होता था। कम्बुज में राजावृन्द अपने सुकार्यों की समता महाभारत के पात्रों से करने में गौरव अनुभव करते थे।

'प्रसात कोम्नप् शिलालेख' में कहा गया है कि **'श्री यशोवामिमहाधिराजः'** अर्जुन के समान ही सव्यसाची थे और हरि से उनका स्नेह था।

अर्ज्जुन स्याज्र्जुनां कीर्त्ति सव्यसाचितया चितां।

रमणीयः परस्त्रीषु निष्कामः कथमप्यगात्।।

प्रारूप शिलालेख में राजेन्द्र वर्मा का तुलना एक साथ अर्जुन युधिष्ठिर भीम के साथ बड़े सुन्दर शब्दों में की गई है। महाभारत के लेखक **'सत्यवती–सुत'** के लिए आदरभाव कम्बुज के अभिलेखों में ध्वनित है। राजेन्द्रवर्मा ने यशोधर पुरी को धर्मार्थकर्म से उसी प्रकार भर दिया जिस प्रकार सत्यवती सुत ने तीनों वेदों से 'भारत' नामक ग्रन्थ को आप्लावित किया था–

यशोधरा येन, पुरी परीक्षा धर्म्मार्थक मैरियमभ्यपुरि।

कृत्वा पुनर्भारतसंहितैव वेदैस्त्रिभिस् सत्यवतीसुतेन्।।

अश्वत्थामा को द्विजश्रेष्ठ द्रोणपुत्र कहा गया है। शिवपाद मन्दिर की मलिन मध्यदेशों की तुलना सती धर्मिणी कुन्ती से की गयी है–

सती सतीनां परमा वनाढयेण वा श्वरि।

कुन्तीव धर्स्मिणाग्राग्राद् ब्रह्मणीवापि काम्बुजा।।

12.3.2 चम्पा में महाभारत

चम्पा में तीसरी शताब्दी से लेकर चौदहवीं शताब्दी तक संस्कृत और चाम भाषा में अभिलेख मिलते हैं, इनमें संस्कृत अभिलेखों का विशेष महत्व है। ये अभिलेख केवल छोटे–मोटे सूचनात्मक अभिलेख न होकर चम्पा की साहित्यिक निधियाँ है। दूसरी शताब्दी के अन्त में श्रीमार ब्राह्मण धर्म के अनुयायी थे। चम्पा से प्राप्त श्रीमार के वंशज द्वारा उत्कीर्ण वोचाह अभिलेख (तीसरी शताब्दी) दक्षिण–पूर्व एशिया से उपलब्ध संस्कृत अभिलेखों में से प्राचीनतम है। दक्षिण पूर्व एशिया का पूर्वतम भाग चम्पा नामक राष्ट्र था। किन्तु अब यह चम्पा नहीं कहलाता। चम्पा का प्राचीन भारतीय राज्य आधुनिक उत्तर और दक्षिण वियतनाम के लगभग मध्य से 18 से 10 अक्षांस के बीच था। समय–समय पर इसकी सीमाएँ परिवर्तित होती रही हैं। चम्पा के तीन प्रमुख प्रान्त रहे है–

1. अमरावती उत्तरी भाग है। जिसे वर्तमान समय में **'क्वाङ्नम'** के नाम से जाना जाता है। यहाँ पर प्रसिद्ध राजधानियाँ चम्पापुर और इन्द्रपुर रही है।
2. विजय चम्पा का मध्य भाग है। जिसे वर्तमान समय में विन्ह–दिन्ह के नाम से जाना जाता है।
3. पाण्डुरंग दक्षिणी चम्पा है इसका प्रमुख नगर वीरपुर (राजपुर) है। कौठार जिसे वर्तमान समय में खान्द–होत्र के नाम से जाना जाता हैं। यह प्रायः पाण्डुरंग का

भाग रहा है। चम्पा में महाभारत के पात्रों के साथ राजाओं द्वारा स्वयं को जोड़ने की या तुलना करने की परम्परा रही है जिसका दिग्दर्शन अभिलेखों में भी मिलता है। चम्पेश्वर श्री प्रकाश धर्म्मा ने भगवान ईशानेश्वर, श्री शम्भुभ्रदेश्वर और श्री प्रभासेश्वर की सतत् पूजा के लिए दान दिया। प्रशस्तिपत्र में कहा गया है कि कौण्डिल्य नामक द्विजर्षभ (ब्राह्मणश्रेष्ठ) ने द्रोणपुत्र अश्वत्थामा द्वारा प्रदान किये गये शूल को (चम्पा) में स्थापित किया–

तत्र स्थापितवांछूलं कौण्डिन्यस्तद्द्विजर्षभः। अश्वत्थाम्नो द्विजश्रेष्ठाद्द्रोणपुत्रादवाप्य तं।।

सांस्कृतिक दृष्टि से चम्पा में द्रोण पुत्र अश्वत्थामा द्वारा प्रदत्त त्रिशूल की द्विज कौडिन्य द्वारा स्थापना उल्लेखनीय है। यह निश्चय ही ऐतिहासिक तथ्य नहीं है परन्तु चम्पावासियों द्वारा स्वधर्म को महाभारत से एकाकार करने की प्रवृत्ति से भारतीय पाठक को भाव–विभोर कर देती है। लक्ष्मी, प्रद्मा और श्री है। ये समुद्र मन्थन के समय प्रकट हुई थी। विक्रान्त वर्मा द्वितीय का '**मिसोन् अभिलेख**' स्वर्णरौप्यमयी लक्ष्मी का इतिहास देता है। लक्ष्मीमूर्ति की स्थापना सर्वप्रथम राजा शम्भुवर्मा ने की। ईटों की वेदी पर प्रतिष्ठित मूर्ति को रजत के पतरे से मढ़वाया। इस अभिलेख में लक्ष्मी क्षीरोदधि से निकली थी। राजा रुद्रवर्मन तृतीय के अभिलेख में युधिष्ठिर, दुर्योधन और युयुत्सु का उल्लेख है–

युधिष्ठरोऽसौ–दुर्योधनाद्यैः युयुत्सुः। व्वरसेवकः नाम्ना यः पादरक्ष।।

चम्पा '**राजाधिराजः मद्रवर्मन तृतीय युद्ध**' में पाण्डुपुत्र के समान ही विजय प्राप्त करते है। महाभारत के अनुशासन पर्व की उपमन्य की कथा (मेघवाहनोपाख्यान) का विक्रान्तवर्मन के '**मसोन् शिलालेख**' में संकेत प्राप्त होता है।

इच्छातीतवर (3) प्रदानवशिनं भवत्या सामाराद्धय यम्
त्रैलोक्य प्रभावप्रभावमहता वृत्तस्म हन्त्रा बिना।

भुङ्क्रेद्याप्युमन्युरिन्द्र (4) धवलं क्षीराण्र्णवं वान्धवैः।
श्री शानेश्वरनाम एष भगवान पायादपायात् स वः।।

राजाधिराजश्रीचम्पापुरपरमेश्वर श्री हरिवर्म्मदेव के धर्म में युधिष्ठिर के सदृश तथा पराक्रम में श्रीकृष्ण के सदृश बताया गया है–**यौ धम्मैन (ण) युधिष्ठरेण (सदृशो) वीर्य्येण कंसारिणा सौन्दर्य्यन**

मनोभुवा–भूपोऽपत्येन ह। त्रेणु भृगूत्र एन पुरुषोत्तमः श्री सेना पतिपर दमात्य (म्) शुभम्।

12.3.3 इण्डोनेशिया में महाभारत

साहित्य के रूप में महाभारत के संवर्धन एवं अपनी रुचि के अनुकूल परिष्कार का श्रेय केवल इण्डोनेशिया को ही है। अपने इसी योगदान के कारण अनुसन्धान जगत में 'कविसाहित्य' का विशेष स्थान है। क्योंकि पाश्चात्य विद्वानों ने इसे **Indo Javanese Literature** कहा है।

'कावि' इण्डोनेशिया की प्राचीन साहित्यिक भाषा है, जिसमें संस्कृत शब्दों का प्रचुर प्रयोग हैं। इस भाषा में लिखा गया साहित्य भारतीय साहित्य से प्रभावित है, यद्यपि कहीं भी किसी भी संस्कृत ग्रन्थ का पूरी तरह से अनुवाद नहीं किया गया हैं। कवि एवं लेखकों को जो प्रसंग अच्छे लगे उनको लेकर स्वतन्त्र काव्य की रचना की है। इस प्रकार संस्कृत का आधार होते हुए भी कहीं–कहीं संस्कृत श्लोक उद्धृत करने के

बावजूद भी यह 'कवि साहित्य' अपनी विशेष साहित्यिक निधियों को समेटे हुए है। इसलिए हम इण्डोनेसिया के प्राचीन साहित्य को भारत का 'बन्धु साहित्य भी कहते है। दीपान्तर में प्राप्त प्राचीनतम् मन्दिर (सातवीं–आठवीं शती) में महाभारत के प्रमुख पात्रों के नाम पर हैं। **'दीपान्तर इण्डोनेसिया'** का प्राचीन नाम है। इसे **'नूसान्तर'** भी कहा जाता है। यहाँ पर नूस का अर्थ द्वीप है और अन्तर का अर्थ समूहवाची है इस प्रकार द्वीपों का समूह द्वीपान्तर है। दियेङ् पठार में स्थित मन्दिरों के नाम इस प्रकार है–

1 चण्डी अर्जुन (आठवीं से नवीं शताब्दी)

2 चण्डी पुन्तदेव (पुत्रदेव–युधिष्ठिर)

3 चण्डी भीम

4 चण्डी नकुल अथवा चण्डी सम्बद्ध

5 चण्डी द्वारावती घटोत्कच चण्डी द्वारावती

कवि भाषा में चण्डी को मन्दिर कहा जाता है। यहाँ द्वीपान्तर में संस्कृत छन्दों में रचित कवि भाषा के काव्यग्रन्थों को काकविन् कहते हैं। चण्डी प्राम्बानान् (नौवीं शताब्दी में निर्मित त्रिमूर्ति मन्दिर) में काकविन कृष्णायण के चण्डी जागे। तेरहवीं शताब्दी में काकविन पार्थयज्ञ, कृष्णायण और कालयवनान्तक के विशाल मंदिर समूहों में कथा दृश्य उत्कीर्ण है।

महाभारत बालि और जावाद्वीप वासियों के जीवन का आदर्श एवं आधार है। वह उनके जन–जीवन, कला एवं साहित्य में समाया हुआ है। भारतवर्ष के बाहर केवल द्वीपान्तर प्रांगण में यह साहित्य रूप में निबद्ध हुआ है। भारतवर्ष के बाहर केवल द्वीपान्तर प्रांगण में यह साहित्य रूप में निबद्ध हुआ। अपने इसी योगदान के कारण अनुसंधान जगत् में **'कवि साहित्य'** का विशेष स्थान रहा है।

बालिद्वीप में महाभारत **'अष्टादर्शपर्व्व'** के नाम से जाना जाता है। यह महाग्रन्थ केवल अनुपम कथा साहित्य में ही नहीं उच्चकोटि का धर्मशास्त्र और नीतिशास्त्र भी है। इस महाकाव्य से प्रेरित होकर द्वीपान्तर के कवियों ने अनेक रचनाओं का सृजन किया है। **'तुतुर–सार समुच्चय'** में महाभारत के महत्त्व पर सात श्लोक है। ये श्लोक और इन पर कवि टीका द्वीपान्तर में महाभारत की महत्ता पर प्रकाश डालती है। क्योंकि सारसमुच्चय आज भी बालिद्वीप में सबसे अधिक सुना तथा पढ़ा जाने वाला ग्रन्थ है। आचार्य रघुवीर ने इसे बालिद्वीप की **'गीता'** कहा है। दार्शनिक ग्रन्थों के सार को **'तुतुर'** में कहा जाता है।

12.3.3.1 इण्डोनेशिया में महाभारत के पर्वों के तीन सूचियाँ

द्वीपान्तर में महाभारत के पर्व्वो की तीन सूचियाँ मिलती है। जिसका विवरण इस प्रकार है–**प्रथम सूची–**प्रथम सूची कवि आदिपर्व के आरम्भ में महाभारत के 18 पर्वो/ पर्व्वो का वर्णन है–

आदिः सभावनविराट उद्योगमाख्यं
भीष्मद्विजार्कसुतशल्यगदाश्चसौत्ति।

स्त्रीप्रस्थानि मुशलशान्तिक तथाश्रमं च स्वर्गान्तमण्टदशपर्व्व निरुक्तमसंख्यम्।।

वसन्ततिलका छन्द में निबद्ध इस श्लोक मे भारतीय महाभारत के 'अनुशासनपर्व' का नाम नहीं है, परन्तु 18 की संख्या 'गदापर्व' से पूर्ण होती है।

द्वितीय सूची–द्वितीय सूची में संस्कृत महाभारत के सभा, वन, सौप्तिक, अनुशासन और आश्वमेधिक के स्थान पर भुजङ्ग, कृप, अस्वतम, गद और गदविर पर्वो का उल्लेख है। इसी सूची को विशेष महत्त्व नहीं दिया जाता क्योंकि इसमें पर्वो का क्रम भ्रष्ट है।

तृतीय सूची–तृतीय सूची यह सूची आदिपर्व के गद्य में है और विस्तृत है। प्रत्येक पर्व में आने वाले श्लोकों की संख्या, अध्यायों की संख्या, अध्यायों की संख्या और विषय का संक्षेप में वर्णन है–(1) ल्विर निपर्वः (2) आदिपर्व (3) सभापर्व (4) अरण्यक पर्व (5) विराटपर्व्व (6) उद्योगपर्व्व (7) भीष्मपर्व्व (8) द्रोणपर्व्व (9) कर्णपर्व्व (10) शल्यपर्व्व (11) गदापर्व्व (12) सौप्तिकपर्व्व (13) स्त्रीप् पर्व्व (14) अल्लाप पर्व्व (15) आश्रमवासपर्व्व (16) प्रास्थानिक पर्व्व (17) भौसलपर्व्व (18) स्वग्गारोहणपर्व्व

12.3.4 इण्डोनेशिया में पाये जाने वाले महाभारत के पर्वों का वर्ण विषय

संस्कृत महाभारत पद्यमय है। किन्तु दीपान्तर का अष्टादश पर्व गद्य साहित्य में है। बीच–बीच में संस्कृत श्लोक भी उद्धृत है। पर्वों में आदि, विराट, उद्योग, भीष्म, आश्रमवासिक, मौसल, प्रस्थानिक और स्वर्गारोहण पर्व्व रूप में प्राप्त होते है। परन्तु सभा, वन, द्रोण, कर्ण, शल्य, गदा, सौप्तिक, स्त्री, शान्ति और आश्वमेधिक पर्व्वो के रूप में उपलब्ध नहीं है। इन पर्वो के हस्तलेख उपलब्ध न होने के कारण यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है कि कवि साहित्य में इन पर्व्वो की रचना नहीं हुई थी। यद्यपि ये पर्व्व पृथक् रूप में तो उपलब्ध नहीं है पर इनके विषय को लेकर लिखे गये ग्रन्थ एवं अन्य साहित्यिक रचनाएँ मिलती है। उदाहरणाथ–कवि ग्रन्थ पार्थयज्ञ और अर्जुन विवाह का विषय 'सभा' और 'वनपर्व' से लिया गया है। तुत्तुर सार समुच्चय में श्लोक सभा एवं 63 श्लोक वनपर्व से आये हैं। द्रोण, कर्ण और शल्यपर्व की कथा भारतयुद्ध नामक ग्रन्थ में है। सार–समुच्चय में 135 श्लोक शान्तिपर्व के हैं जबकि इसी प्रकार पर्वो की सूची में संस्कृत अनुशासन पर्व का नाम नहीं है। तुतुर सार समुच्चय में अनुशासन पर्व्व के 47 श्लोक समाविष्ट है। गदा और अश्वमेधिकपर्व न तो पर्व रूप में प्राप्त है न ही इनके विषय पर रचित कोई ग्रन्थ उपलब्ध है। इण्डोनेशिया का वैयक्तिक संग्रहालय भी बहुत समृद्ध है। सम्भव है कि जो पर्व अभी तक नहीं मिले है। इन संग्रहालयों में सुरक्षित हो और भविष्य में मिल जाएँ।

1. **कवि आदि पर्व**–आदिपर्व्व द्वीपान्तर में लोकप्रिय पर्वो में से है। बालि द्वीप में आज भी इसका प्रवचन करते हुए कथावाचक बालिभाषा में भावानुवाद भी करता जाता है। इसकी लोकप्रियता का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि डलङ् (सूत्रधार) वायाङ्कुलित (छाया नाटक) द्वारा इसको जनता में प्रदर्शन करते हैं। अर्वाचीन साहित्यिक बालि भाषा में आधुनिक छन्दों में यह ग्रन्थ उपलब्ध है। यह आदिपर्व 'परिकन्' कहलाता है। इसमें आदिपर्व की विभिन्न कथाओं का वर्णन है। आरम्भ में धौम्य के शिष्य आरुणि (उद्दालक), उपमन्यु, वेद और अश्विनी कुमार का दर्शन देव की आदि कथा है। तदुपरान्त पौष्यचरित आख्यान है। पौव्यपर्व की कथा बालिद्वीप में बहुत लोकप्रिय है। मुनि भृगु की पत्नी का राक्षसों द्वारा हरण तथा भृगु मुनि के द्वारा अग्नि को शाप देना, रूरू और प्रथमना कथा, जरत्कारु प्रसंग, तत्पश्चात् मुनि कश्यप की पत्नी कद्रु को पुत्र रूप में सहस्र सर्प की तथा विनता को अरुण और गरुण की प्राप्ति, समुद्र मंथन, सर्पयज्ञ कथा वर्णित है। सर्पयज्ञ कथा के पश्चात् भगवान व्यास का जन्म एवं आजकल बालिद्वीप में कवि भाषा पढ़ाने के लिए शकुन्तला की कथा का प्रसंग उल्लेखनीय है। '**तथा च देवयानी कच**' दृष्टान्त के बाद पौरववंश का इतिहास है। कवि आदि पर्व खाण्डववन की

कथा से समाप्त होता है। जावा में महाकाव्य महाभारत के प्रभाव में अनेक साहित्यिक कृतियों की रचना हुई। यै कृतियाँ संस्कृत छन्दों में भारत की काव्य परम्परा के अनुरूप है। इन काव्यों की रचना करते समय कवि ने अपनी कल्पना शक्ति का प्रयोग किया, इच्छानुसार कहीं–कहीं कथा परिवर्तित कर दी, और नये पात्रों का सृजन किया है। कवि आदि पर्व की कथाओं पर निम्न काव्यों की रचना हुई है–

- काकविन् हरिविजय (समुद्र–मंथन की कथा)
- आस्तीकाश्रय (जनमेजय द्वारा सर्पयज्ञ करने पर नागों का '**आस्तिक**' की शरण में जाना)
- दिम्बिविचित्र (वृकोदर द्वारा डिम्ब को मारकर हिडिम्बा से विवाह तथा पुत्र घटोत्कच की प्राप्ति)
- रत्नविषय (सुन्दर–उपसुन्दर आख्यान)
- सुभद्रा विवाह (रैवतक पर्वत से अर्जुन द्वारा सुभद्रा हरण और विवाह)
- कालयवनान्तक (के उत्तरार्द्ध के सुभ्रदाहरण आख्यान है)
- खाण्डववन दहन आदि।

2. **कवि उद्योग पर्व** –उद्योग पर्व का जावीकरण 10वीं शताब्दी के अन्त में या 11 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में किया गया। इसमें संस्कृत उद्योग पर्व का अनुवाद न होकर संक्षेप में कथा है। यद्यपि बीच–बीच में पूर्ण या अर्द्धपूर्ण का एक पाद वाले संस्कृत उद्धरण दिये गये है। आचार्य सुशील कुमार डे ने उद्योग पर्व का सम्पादन करते समय जावी उद्योगपर्व के इन उद्धरणों पर संस्कृत उद्योग पर्व के परिप्रेक्ष्य मे विचार किया है। उसके अनुसार इन संस्कृत उद्धरणों को देखते हुए अनुमान होता है कि जावा में संस्कृत उद्योग पर्व का कोई उत्तर भारतीय संस्करण रहा होगा। कौरवों एवं पाण्डवों द्वारा युद्ध के लिए सज्जा करना, पाण्डवों की ओर से अर्जुन तथा कौरवों की ओर से दुर्योधन का कृष्ण के पास जाने, कृष्ण द्वारा अपनी सम्पूर्ण सेना सुयोधन को देने, अर्जुन का सारथ्य स्वीकार करना, पाण्डवों के मामा शल्य को दुर्योधन द्वारा कूटनीति से अपने पक्ष में करने का वर्णन है। तदनन्तर युद्ध न हो, शान्ति पूर्वक समस्या का समाधान करने के उद्देश्य से श्रीकृष्ण का दुर्योधन की राज सभा में जाना। विभिन्न उदाहरणों द्वारा दुर्योधन को समझाने का प्रयत्न करना, पर दुर्योधन का अपने हठ पर अड़े रहना, श्रीकृष्ण को बन्दी बनाने की योजना, तत्पश्चात् श्रीकृष्ण का सबके सम्मुख अपने अद्भुत विष्णु स्वरूप को प्रकट करने की कथा है। अन्त में अम्बाख्यान तथा अम्बा का शिखण्डी के रूप में जन्म का वर्णन है। कवि उद्योग पर्व की कथा पर '**काकविन् इन्द्रविजय**' और '**अश्वाश्रम**' नामक ग्रन्थ की रचना हुई है।

3. **कवि भीष्म पर्व**–कवि भीष्मपर्व संस्कृत भीष्मपर्व से बहुत छोटा है। इसमें सभी प्रमुख विषयों का वर्णन है। इसके महत्वपूर्ण भाग भगवद्गीता अति संक्षेप से है। भीष्मपर्व में युद्ध सम्बन्धी वर्णनों का बाहुल्य है। कवि भीष्मपर्व में ब्रह्माण्ड, विश्वोपाख्यान, कृष्ण–भीम संवाद, भीष्म का शरतल्प पर लेटे समय अर्जुन द्वारा भूमि फोड़कर पानी निकालना, उद्योगपर्व का उल्लेख आदि मुख्य विषयों का वर्णन है। पर्व के अन्त में शरशय्या पर लेटे हुए भीष्म दुर्योधन को समझाते हुए कहते हैं कि तुम पाण्डवों से सन्धि कर लो–'**धनंजयेन वीरेण सन्धिस्तात प्रयुज्यताम्।**' इसी समय शरशय्या पर लेटे हुए भगवान् भीष्म के समीप भगवान् नारद ऋषि आए।

नारद के आगमन के पश्चात् युधिष्ठिर के प्रार्थना करने पर भीष्म ने राजनीति का उपदेश दिया।

एष एष परो धर्मो यद् राजा रक्षति प्रजा।

तथा च–यदा न कुरुते धर्म राजा भूतानि पालयन्।

उपदेश सुनकर युधिष्ठिर एवं महाराजा कृष्ण अपने–अपने शिविर में गये। यह संजय का महाराज धृतराष्ट्र के प्रति प्रवचन था। इससे कवि भीष्मपर्व का अन्त हो जाता हैं। काकविन पार्थविजय का वर्णविषय कवि भीष्मपर्व है।

4. **कवि आश्रमवास पर्व**–कवि आश्रमवास पर्व में धृतराष्ट्र का तपस्या के लिए वन जाने तथा अन्त में युधिष्ठिर द्वारा पितृतर्पण करने का वर्णन है।

5. **कवि प्रस्थानिक पर्व**–कवि प्रस्थानिक पर्व में पाण्डवों का वन के लिए प्रस्थान मार्ग में उनकी मृत्यु, भटार धर्म के अनुग्रह से केवल युधिष्ठिर का सशरीर परलोक में जाने की कथा है।

6. **कवि स्वर्गारोहण पर्व** –कवि स्वर्गारोहण पर्व में राजा युधिष्ठिर का स्वर्गगमन तथा यहाँ स्वजनों से मिलने का आख्यान है। काकविन हरिवंश संस्कृत हरिवंश से भिन्न है। इसमें संस्कृत हरिवंश के एक भाग का वर्णन है। रुक्मणी हरण के पश्चात् कथा में पर्याप्त भिन्नता है। द्वीपान्तर में कुछ ऐसे काव्यों की रचना हुई, जिनका वर्ण्य–विषय दो या दो से अधिक पर्वों की कथाएँ है। काकविन भारत–युद्ध का उद्योग, भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य तथा सौप्तिक पर्व है। तुतुर सार समुच्चय में 18 श्लोक आदि पर्व, 01 सभापर्व, 62 वनपर्व, 54 उद्योगपर्व, 3 भीष्मपर्व, 135 शान्ति पर्व और 420 अनुशासन पर्व से समाविष्ट है। काकविन् कृष्णान्तक का कथानक आश्रमवास, मौसल और प्रस्थानिक पर्व से तथा काकविन कालयवनान्तक कृष्णान्तक का कथानक हरिवंश और आदिपर्व से लिया गया है। इस प्रकार विभिन्न साक्ष्यों से स्पष्ट होता है कि महाभारत की सभ्यता, संस्कृति एवं पात्र दक्षिण पूर्व–एशिया में प्रसिद्ध है।

बोध/अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न–क

निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्पों का चयन कीजिए –

1. महाभारत के लेखक का क्या नाम है? (महर्षि वाल्मीकि /महर्षि वेदव्यास)
2. महाभारत का समय क्या है? (500 ई. पू. के बाद/300 ई. पू. के बाद)
3. महाभारत कितने पर्वों में विभक्त है? (18 पर्वों/14 पर्वों)
4. विश्व के सम्पूर्ण साहित्य में कौन सी सर्वाधिक विपुल रचना है। (महाभारत /उपनिषद्)

बोध प्रश्न–ख

निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. महाभारत का उल्लेख .....मिलता है। (कम्बोज/हैदराबाद/दिल्ली)
2. बालीद्वीप में महाभारत को .....नाम से जाना जाता है। (अष्टादश पर्व/चतुर्दश पर्व)
3. इण्डोनेशिया का नाम.....है। (द्वीपान्तर/जावा)

4. .....बालि और जावाद्वीप वासियों के जीवन का आदर्श एवं आधार है। (महाभारत / मेघदूत)

बोध प्रश्न–ग

1. कम्बोज / कम्बुज में प्राप्त होने वाले महाभारत को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

2 चम्पा में महाभारत को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

अभ्यास प्रश्न

1. महाभारत का दक्षिण पूर्व एशिया के देशों में प्रचलन को स्पष्ट कीजिए।

12.4 सारांश

महाभारत ने धर्म, कर्म, समर्पण, आस्था, निष्ठा और माता–पिता के प्रति कर्तव्य के संदेश का प्रचार–प्रसार किया है। दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में महाभारत के अनेक रूप मौजूद है। महाभारत वहाँ के जीवन और संस्कृति का हिस्सा बन चुकी है। दक्षिण पूर्व एशियाइ देशों की लोक संस्कृति में महाभारत एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। महत्वपूर्ण बात यह है कि दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों में कई मुसलमान देश है जो पूर्ण श्रद्धा के साथ महाभारत का मंचन करते है। क्योंकि विश्व के सम्पूर्ण साहित्य में महाभारत सर्वाधिक विपुल रचना है। यह वह राष्ट्रीय विश्वकोष है जिसे एक साथ महाकाव्य, इतिहास और धर्मग्रन्थ होने का गौरव प्राप्त है। तत्कालीन भारतीय समाज, धर्म, संस्कृति, राजनीति और दर्शन से सम्बद्ध व्यापक सामग्री इसमें उपलब्ध होती है। इसके कुछ पर्व या अध्याय इतने महत्वपूर्ण है कि इनको भारतीय समाज की आचार–संहिता माना जा सकता है। श्रीमद्भगवत गीता नामक प्रस्थानत्रयी का एक प्रसिद्ध एवं श्रेष्ठ ग्रन्थ महाभारत का ही अंश है। महाभारत ज्ञान के स्तर पर वेद और लोक का अभूतपूर्व समन्वय प्रस्तुत करता है, इसलिए इसको पञ्चम वेद भी कहते है। इस इकाई का अध्ययन करने पर आप महाभारत की विषयवस्तु , महाभारत का दक्षिण पूर्व एशिया में प्रचलन

- इण्डोनेशिया में प्राप्त होने वाले महाभारत के पर्वों की तीन सूचियाँ–प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय सूची तथा उसमें पाये जाने वाले महाभारत के पर्वों विशेषकर कवि आदि पर्व, उपयोग पर्व, कवि भीष्मपर्व, कवि आश्रम पर्व, कवि प्रस्थानिक पर्व कवि स्वर्ग्यारोहण पर्व के बारे में ज्ञान प्राप्त हुआ।

12.5 शब्दावली

1. विश्वकोश – विश्व सामग्री
2. बृहत्तम – विशाल से विशाल

3.	गौरव	–	आत्मसम्मान
4.	द्वीपान्तर	–	द्वीप समूह
5.	आप्लावित	–	ढके हुए
6.	भग्नावशेष	–	पत्थर के अवशेष
7.	द्विजर्षभ	–	ब्राह्मण श्रेष्ठ
8.	काकविन	–	इण्डोनेशिया की भाषा
9.	तुत्तुर	–	दार्शनिक ग्रन्थों के सार को
10.	शिलालेख	–	पत्थर के लेख
11.	अभिलेख	–	कागज के लेख

12.6 कुछ उपयोगी पुस्तक

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास, उमाशंकर शर्मा ऋषि, एम. आर. काले के नोट्स सहित संस्करण, मोतीलाल बनारसी दास दिल्ली, 1969
2. ए. बी. कीथ, History of Sanskrit Literature,अनुवादक डॉ. मंगलदेव शास्त्री, 1962
3. संस्कृत साहित्य में नीतिकथा का उद्‌गम एवं विकास, प्रभाकर नारायण कवठेकर, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली
4. संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय, 1968
5. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, रामनारायण लाल विजयकुमार, 2018
6. इण्डोनेशियाई महाभारत–विराटपर्व, रंजना मालवीय, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली, 2014
7. संस्कृत साहित्य का इतिहास, विन्टरनित्स, 1987
8. महाभारत गीताप्रेस, गोरखपुर
9. भारत एवं एशिया के अन्य देश, डॉ. सुदर्शना देवी सिंघल ,विद्याभवन राष्ट्रभाषा ग्रन्थमाला,वाराणसी, 1979
10. विश्व पटल पर संस्कृत साहित्य, डा. देशराज, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, 2020

12.7 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न–क

(1) महर्षि वेदव्यास (2) 500 ई. पू. के बाद (3) 18 पर्वो (4) महाभारत

बोध प्रश्न–ख

(1) कम्बोज (2) अष्टादश पर्व (3) द्वीपान्तर (4) महाभारत

बोध प्रश्न–ग

1. **कम्बोज में प्राप्त होने वाले महाभारत –**

   कम्बोज/कम्बुज में संस्कृत महाभारत ग्रन्थ का अस्तित्व छठीं शताब्दी में

अभिलेख द्वारा प्रमाणित है। किन्तु इन की भाषाओं में इसके किसी भी पर्व का अनुवाद अथवा उस पर स्वतन्त्र रूप से लिखा गया कथा–ग्रन्थ नहीं मिलता है।महाभारत सम्बन्धी सर्वप्राचीन उल्लेख कम्बोज के शिलालेखों में मिलता है। ये शिलालेख सुन्दर काव्यमयी संस्कृत में है। कम्बुज देश को भारत से सम्बन्ध प्रथम शती से ही प्रारम्भ हो जाते है। पाँचवी शताब्दी से सुन्दर काव्यमयी संस्कृत में लिखे अभिलेख मिलने लगते है।

2. चम्पा में महाभारत

चम्पा में तीसरी शताब्दी से लेकर चौदहवीं शताब्दी तक संस्कृत और चाम भाषा में अभिलेख मिलते हैं, इनमें संस्कृत अभिलेखों का विशेष महत्व है। ये अभिलेख केवल छोटे–मोटे सूचनात्मक अभिलेख न होकर चम्पा की साहित्यिक निधियाँ है। दूसरी शताब्दी के अन्त में श्रीमार ब्राह्मण धर्म के अनुयायी थे। चम्पा से प्राप्त श्रीमार के वंशज द्वारा उत्कीर्ण वोचाह अभिलेख (तीसरी शताब्दी) दक्षिण–पूर्व एशिया से उपलब्ध संस्कृत अभिलेखों में से प्राचीनतम है। दक्षिण पूर्व एशिया का पूर्वतम भाग चम्पा नामक राष्ट्र था। किन्तु अब यह चम्पा नहीं कहलाता।

अभ्यास प्रश्न–इस प्रश्न का उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखेंगे।